स्नातक प्रथम खण्ड(पत्र–प्रथम)

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

राजनीतिक सिद्वांत का अर्थ, विशेषताएँ, प्रकृति एवं क्षेत्र

राजनीतिक सिद्वांत का अंग्रेजी रूपान्तरण Political Theory होता है, जिसमें थ्योरी (Theory) शब्द की उत्पत्ति यूनानी शब्द(Theoria) थ्योरिया से हुई है। जिसका अर्थ होता है कि हम चिंतन की अवस्था में किसी वस्तु को मानसिक दृष्टि से देखें और उस वस्तु का अस्तित्व एवं कारण प्रकट हो सके। इस अर्थ में इसके अन्तर्गत अस्तित्व का ज्ञान या सत्ता मीमांसा(Ontology) एवं कारणात्मक व्याख्या आ जाते हैं जिसका स्वरूप धार्मिक, दार्शनिक, व्यवहारपरक या तार्किक चिन्तन का हो सकता है।

विभिन्न विद्वानों ने राजनीतिक सिद्वांत को अलग–अलग ढ़ग से परिभाषित किया है–

1. **डेविड हैंल्ड के अनुसार** – " राजनीतिक सिंद्वांत राजनीतिक जीवन में संबंधित धारणाओं और सामान्य नियमों का वह समूह है, जिसमें सरकार, राज्य और स्थान की प्रकृति, उद्वेश्य तथा प्रमुख विशेषताएँ एवं व्यक्ति की राजनीतिक क्षमताओं के बारे में विचार, परिकल्पनाएँ और वर्णन शामिल होते हैं।"
2. **ऐन्ड्रयू हैंकर के अनुसार –** "राजनीतिक सिद्वांत में तथ्य और मूल्य दोनों समाहित होते हैं तथा दोनों एक–दूसरे के पूरक हैं। "

3. **जार्ज कैटलिन के अनुसार –** " राजनीतिक सिंद्वांत, राजनीतिक विज्ञान और राजनैतिक दर्शन दोनों का समिश्रण है जहॉ विज्ञान सम्पूर्ण सामाजिक जीवन के नियंत्रण के विभिन्न स्वरूपों की प्रक्रिया की और ध्यान आकर्षित करता है। "

सरल शब्दों में "सिद्वांत शब्द का प्रयोग हमेशा किसी परिघटना की व्याख्या करने के रूप में किया जाता है विशेषकर जब इसे सामान्य और अमूर्त शब्दों में किया जाय।" आम तौर पर यह भी मान लिया जाता है कि क्या वैज्ञानिक नियम का पालन हुआ है अथवा नहीं। वैज्ञानिक और अवैज्ञानिक ढ़गों के सैधान्तीकरण में अन्तर निकाला जा सकता है लेकिन इन दोनों रूपों में सिद्वांत और कानून को समान नहीं समझना चाहिए। "विधि" से अभिप्राय किसी स्पष्ट, निश्चित और बाध्यकारी वस्तु से है, जबकि सिद्वांत किसी घटना की व्याख्या मात्र प्रस्तुत करता है। यह किसी कानून के अस्तित्व का संकेत दे सकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राजनीतिक चिंतन में केवल आर्दश की व्याख्या की जाती है, जबकि राजनीतिक सिद्वांत में व्यक्ति, समाज व राज्य की विस्तृत व्याख्या की जाती है।

राजनीतिक सिद्वांत की विशेषताएँ, स्वरूप एवं क्षेत्र

भारतीय, चीनी, मिश्री, हेब्रयु, यूनानी और रोमन सभ्यताओं की तरह, राजनीतिक सिद्वांत का इतिहास भी पुराना है। यद्यपि यूनानियों को इसका जनक होने का श्रेय दिया जाता है क्योंकि इस दिशा में उन्होंने विशेष योगदान किया है। मोटे तौर पर राजनीतिक सिद्वांत के दो रूप हैं – क्लासीकी(पुरातन) और आधुनिक तथा दोनों के विशिष्ट लक्षण है। जबकि क्लासीकी सिद्वांत मुख्य रूप में मानकरात्मक(Normative) है और इसीलिए इसको मानने वाला राजनीतिक सिद्वांतशास्त्री राजनीतिक दार्शनिक सा लगता है। आधुनिक सिद्वांत मुख्य रूप में व्यवहारपरक या अनुभवजन्य(empirical) है। इसलिए इसको मानने वाला राजनीतिक सिद्वांतशास्त्री, राजनीतिक वैज्ञानिक जैसा लगता है।

क्लासीकी राजनीतिक सिद्वांत – इसका विकास प्राचीन युग में छठी शताब्दी ई0पू0 से पॉचवी शताब्दी में रोमन साम्राज्य के पतन तक हुआ खासकर प्लेटो की रचनाओं में देखने को मिलता है। इसके निम्नलिखित लक्षण स्पष्ट होते हैं–

1. **व्यक्तित्व और राज्य** – क्लासीकी राजनीतिक सिद्वांत की मूल संरचना और राज्य के संबंध में "आत्मा" की संकल्पना है। आत्मा मनुष्य के जीवन के साथ का सिद्वांत है, मानव एक पूर्ण कृति है। यदि वह संगठित और जब पूर्ण हो तो विवेकशील ढ़ग से संगठित समाज में रहे। प्लेटो और अरस्तु दोनों ने "राज्य के हित" को समाज के नैतिक हित के अधीन रखा है जिसमें राज्य और आत्माओं दोनों की भागीदारी है। संक्षेप में राज्य का ध्येय सर्वश्रेष्ठ मानवों का यथासंभव निर्माण करना है।
2. **राजनीति के तीन कारक** – प्लेटो आत्मा की त्रिपक्षीय संकल्पना को मानता है। ज्ञान, साहस और लोभ मानव व्यक्तिव के तीन तत्व हैं यद्यपि इसमें ज्ञान सबसे अधिक महत्वर्पूण है।
3. **संगठन का त्रिकारकीय विश्लेषण** – इसमें समस्त संगठित व ध्येयपूर्ण क्रिया पर लागू किया जा सकता है। हर संगठन इस अर्थ में राजनीतिक है कि वह अपने लिए नीतियों का निर्माण, उसका क्रियान्वयन व मूल्यांकन करता है।
4. **संगठन में विघटन** – कोई राजनीतिक व्यवस्था आने वाले सभी युगों में स्थायी नहीं रह सकती। एक व्यवस्था का विघटन होता है और दूसरी व्यवस्था उसका स्थान लेती है। इसे राजनीतिक अपकर्ष का नियम कहा जा सकता है। राजतंत्र का स्थान कुलीनतंत्र, कुलीनतंत्र का स्थान लोकतंत्र ले लेता है। अरस्तु के विचार में एक व्यवस्था से दूसरी व्यवस्था में राजनीतिक व्यवस्थाओं का परिवर्तन अपरिहार्य है जो एक प्रकार की क्रांति है।
5. **राजनीति के विषय में विचार और ज्ञान** – क्लासीकी सिद्वांत की चरम सीमा किसी परिपूर्ण राजनीतिक व्यवस्था की खोज में हुई है जो इसे कल्पनात्मक बना देती है। प्लेटो ने अतिमानव की सर्वोच्चता तथा बाद में विधि की सर्वोच्चता और अरस्तु की उत्तम राज्य की व्यवस्था आर्दशात्मक है। आधुनिक युग में भी क्लासीकी सिद्वांत के प्रबल सर्मथकों में रूसो, हीगल, ग्रीन, बोसांके, लास्की आदि हैं। क्लासीकी सिद्वांत के

मुख्य विन्दु क्रमबद्व राजनीतिक विवेचन, युनानी राजनीति की दीप्तिकरण , वैज्ञानिक विधि संस्थाओं और विचारों का रूप देना, राजनीतिक विचारों का प्रभाव आदि है।

आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत

1500 ई0 के बाद समाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में एक मूलभूत परिवर्तन हुआ जिसका स्वाभाविक प्रभाव यूरोपीय देशों की राजनीतिक परिस्थितियों पर पड़ा। विज्ञान के अविष्कार ने औधौगिक क्रांति को जन्म दिया। एक नया वर्ग(बुर्जुआ वर्ग) उभर कर सामने आया। जिसने एक और मध्य वर्ग को जन्म दिया ताकि वह राजनीतिक क्षेत्र में अपनी भागीदारी बनाना चाही। अतः एक नये आन्दोलन का आरम्भ हुआ जिसकी पराकास्ठा प्रतिनिधि शासन प्रणाली की सफलत्म में हुई। निरंकुश राजतंत्र को हटाकर उदार लोकतंत्र ने अपना स्थान लिया। नई आर्थिक व्यवस्था में पूॅजीवाद को उचित ठहराया गया। इसके विपरीत आलोचको ने एक नये किस्म की समाजवादी व्यवस्था का समर्पण किया। फ्रांस के सिद्वांत शास्त्री ने निश्चयवादी(वैज्ञानिक) अध्ययन पद्वति की दिशा दिखाई। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वपनलोकीय अध्ययनों की जगह वर्त्तमान जगत की असफलताओं का कठोर रूप में व्यवहारिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया।

यह कहा जाता है कि नई प्रवृत्ति थामस हाब्स ने शुरू की जिसमें राजनीति का अध्ययन "सत्ता" और उसके हेतु ऐसे निरंतर संघर्ष के रूप में किया जिसमें मनुष्य अपने जीवन के अंतिम मजों तक लिप्त रहता है। इसी धारणा को जर्मनी में मैक्स बेबर ने स्वीकार किया और उसकी पुर्नव्याख्या के माध्यम से यह धारणा अमेरिका पहॅुचा, जहॉ मैथ्यिम इसका असली समर्थक हुआ। ईस्टन, ऐप्टर, आमण्ड, डहल और लासवेल इस धारा के समर्थक हैं इसलिए सभी को आधुनिकतावादी कहा जाता है। द्वितीय विश्वयुद्व के बाद व्यवहारवाद आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत की प्रधान धारा बन गई। अतः कहा जा सकता है कि आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत की विशेषताऍ व्यवहारवाद, प्रबल, स्वप्नलोकीय विचारों के प्रति असंतोष, राजनीति को विज्ञान का रूप देने की खोज, कारणात्मक आधारों पर समाज के बारे में दृष्टिकोण और राजनीतिक व सामाजिक विज्ञानों के अन्तनिहित सिद्वांतों का आलोचनात्मक परीक्षण आदि है।

राजनीतिक सिद्वांत की प्रकृति(Nature of Political Theory)

जब से राज्य का स्वरूप लोककल्याणकारी हुआ है तब से राजनीतिक सिद्वांत की प्रकृति में परिवर्त्तनशीलता देखी जा रही है। राजनीति विज्ञान का केन्द्रीय विषय–वस्तु "राज्य" की बदलती हुई आवधारणा के साथ–साथ राजनीतिक चिन्तकों की अध्ययन की पद्वति में बदलाव आया है। सिद्वांत की प्रकृति में परिवर्तनशीलता के कारण ही इसे परम्परागत और आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत में विभाजित किया गया है।

परम्परागत राजनीतिक सिद्वांत की प्रकृति – परम्परागत राजनीतिक सिद्वांत में दार्शनिक पहलू पर ज्यादा जोर तथा आधुनिक वैज्ञानिक पद्वतियों को नजरअन्दाज किया गया है। परिवर्तन के लिए उत्तरदायी तत्वों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है। परम्परागत राजनीतिक सिद्वांत की प्रकृति औपचारिक व संस्थागत अध्ययन से जुड़ी हुई है। इसमें राजनीतिक संस्थाओं की उत्पत्ति, स्वरूप, प्रकृति, कार्य क्षेत्र उसके विषय वस्तु रहे हैं। उदाहरण के तौर पर प्लेटो ने अपनी रचना Republic में "आदर्श राज्य" को अपने सिद्वांत का विषय बनाया है और उसके शिष्य अरस्तु ने अपनी रचना Politics में "नगर राज्य" की ही व्याख्या की है। बाद के विद्वानों यथा–डायसी, लास्की, ऑग व जिंक के द्वारा भी संस्थाओं के औपचारिक एवं कानूनी स्वरूप पर बल दिया है।

परम्परागत राजनीतिक सिद्वांत की प्रकृति वर्णात्मक पद्वति पर आधारित है जबकि विश्लेषणात्मक पद्वति को नजदअंदाज किया गया है साथ ही इसके अन्तर्गत आदर्शात्मक पद्वति जिसमें धर्म, दर्शन, नैतिकता का विशेष प्रभाव देखने को मिलता है। अन्त में परम्परागत राजनीतिक सिद्वांत मुख्यतः मूल्यों एवं लक्ष्यों से जुड़ा हुआ है। इसके विषयों के अन्तर्गत राज्य व सरकार की उत्पत्ति, विकास, संगठन, विभिन्न प्रकार के राजनीतिक दल, राजनीतिक विचारधाराऍं, प्रमुख सरकारों और संविधान का तुलनात्मक अध्ययन, अर्न्तराष्ट्रीय संबंध, राष्ट्रीय प्रशासन है।

आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत की प्रकृति – परम्परागत सिद्वांत की प्रकृति मसलन, औपचारिक, संस्थागत, वर्णनात्मक, आदर्शात्मक, तार्किक, कानूनी दृष्टिकोण के प्रतिक्रिया स्वरूप आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत का उदय हुआ। इसमें आधुनिक विचारकों के द्वारा

नवीन पद्वति वैज्ञानिक पद्वति पर बल दिया। यहॉ औपचारिक संस्थाओं के विवेचन के स्थान पर अनौपचारिक तत्वों पर बल, इसमें संस्थाओं के संरचनात्मक अध्ययन के स्थान पर क्रियात्मक या कार्यात्मक अध्ययन पर बल दिया जाता है। नवीन दृष्टिवादियों में हैरोल्ड लासवेल तथा चाल्स मैरियम की शक्ति उपागम, पैरोटा, मोस्का और मिचेल्स की विशिष्ट वर्गीय सिद्वांत, डेविड ईस्टन का व्यवस्था विश्लेषण उपागम, संरचनात्मक कार्यात्मक उपागम आदि प्रमुख है। आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत में विश्लेषण की महत्ता है एवं आनुभाविक पद्वतियों पर विशेष बल दिया गया है। आनुभाविकता व वस्तुनिष्ठता तो इसकी प्रमुख विशेषता है। इसमें नैतिकता पर भी अधिक बल दिया गया है। इसमें मूल्यविहीन विश्लेषण की पद्वति को अपनाया गया है तथा इसके विचारक मूल्यों और आर्दशों को पूर्णतः अस्वीकार करते हैं।

परम्परागत और आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत की प्रकृति में काफी अन्तर देखने को मिलता है। दोनों में से एक की प्रकृति व अध्ययन पद्वति को उचित नहीं माना जा सकता है। परम्परागत राजनीतिक सिद्वांत के द्वारा कानून, नैतिक एवं मूल्य प्रधान पद्वति पर ज्यादा जोर और वैज्ञानिक पद्वतियों को अमहत्वहीन मानना उचित नहीं है साथ ही आधुनिक राजनीतिक सिद्वांत में जिस तरह प्राकृतिक विज्ञान वाली वैज्ञानिकता पर जोर दिया गया है वह भी पूर्णतः उचित नहीं है। राजनीति में नैतिकता और वैज्ञानिकता दोनों आवश्यक है, मूल्य व तथ्य दोनों ही आवश्यक है। अतः राजनीति के बेहतर अध्ययन के लिए हम दोनों सिद्वांतों की विशेषताओं को आधार बनाकर एक समन्वित दृष्टिकोण अपनाना होगा।

राजनीतिक सिद्वांत का महत्व

मानवीय जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति तथा लक्ष्य की प्राप्ति से राजनीतिक सिद्वांत का वास्ता है। मानव की खुशहाली के लिए विभिन्न विचारधाराओं का प्रतिपदान किया जा रहा है। जहॉ तक राजनीतिक सिद्वांत की उपयोगिता और महत्व की बात है तो इसे निम्नलिखित रूपों में स्पष्ट किया जा सकता है –

1. **समस्याओं के समाधान में सहायक(Solving the Problems)** – राजनीतिक सिद्वांत की उपयोगिता राजनीतिक समस्याओं के समाधान से जुड़ी हुई है। एक राजनीतिक चिन्तक परिस्थितियों का गहन अध्ययन करता है और उस परीक्षण के आधार पर अपना कुछ समाधान प्रस्तुत करता है, जिनसे मानव जीवन यानि सम्पूर्ण व्यवस्था के समस्या के समाधान में सहायता करता है।
2. **आन्दोलन का महत्वपूर्ण कारक(Important Factor in Movement)** – राजनीतिक आन्दोलनों के पीछे सदैव एक विचारधारा का हाथ रहा है। अब तक जितने भी राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय आन्दोलन हुए हैं और समाज में क्रांतियॉ लाई गई, उन सबके पीछे राजनीतिक सिद्वांत की भूमिका ही महत्वपूर्ण रही है। राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में उदारवादी एवं मार्क्सवादी राजनीतिक सिद्वांत की भूमिका रही है। अनुभववादी राजनीतिक सिद्वांत के द्वारा राजनीति विज्ञान में व्यवहारवादी क्रांति लायी गई तो समकालीन राजनीतिक सिद्वांत द्वारा व्यवहारवादी कटट्रता के विरोध में उत्तर व्यवहारवादी को लाया गया।
3. **भविष्य की योजना(Future Plan)** – राजनीतिक सिद्वांत का उद्वेश्य केवल वर्त्तमान परिस्थितियों का समालोचना भरना ही नहीं, बल्कि भविष्य के लिए योजना निर्धारित करना है ताकि एक बेहतर भविष्य का निर्माण हो सके। उदाहरण के तौर पर The Republic में न्याय, शिक्षा और साम्यवादी सिद्वांतों के साथ–साथ अनेक सिद्वांत आर्दश राज्य की परिकल्पना हेतु किया गया है। इसी तरह सकारात्मक उदारवादी चिंतको के द्वारा न्यायपूर्ण समाज के लिए लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना में विभिन्न सिद्वांतो का प्रतिपादन किया जाता रहा है।
4. **नवीन धारणाओं का विकास(Development of New Concepts)** – प्रत्येक युग में अलग–अलग परिस्थितियों के अनुसार राजनीतिक विचारक अपनी नई–नई अवधारणाएँ प्रस्तुत करता है। मध्यकालीन युग के पश्चात् बौद्विक जागरण आन्दोलन व औधोगिक क्रांति ने उदारवाद को सामने लाया और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की अवधारणा का जन्म हुआ। उसी प्रकार परम्परागत उदारवादी सिद्वांत के विरोध में समाजवादी और

मार्क्सवादी सिद्वांत का उदय हुआ और आर्थिक समानता की आवधारणा का विकास हुआ।

5. **राजनीतिक व्यवस्था का औचित्य प्रमाणित करना(Justify the Political system)** – राजतंत्र, कुलीनतंत्र, लोकतंत्र, तानाशाही जैसी विभिन्न प्रकार की व्यवस्था जिसमें प्रत्येक का खास सिद्वांत एवं उद्वेश्य होता है, इन सिद्वांतों द्वारा हर युग की राजनीतिक व्यवस्था के औचित्य को प्रमाणित करने का प्रयास किया जाता है। उदाहरणार्थ मुसोलनी और हिटलर के द्वारा फासीवाद और नाजीवाद के औचित्य को प्रमाणित करने का प्रयास किया गया।
6. **ज्ञान और चेतना में अभिवृद्वि (Enhancement of knowledge & Consciousness)** – राजनीतिक सिद्वांत से ज्ञान और चेतना में वृद्वि होती है। वास्तव में इसकी वृद्वि से ही मानवीय जीवन में प्रकाश आता है तथा आदर्श समाज और आदर्श राज्य का निर्माण होता है। प्लेटो ने ठीक ही कहा है कि "ज्ञान ही सदगुण है और सदगुण ही ताकत है।" इसके द्वारा हम परिवार, समुदाय, राज्य के साथ–साथ सम्पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय समाज को सौहार्दपूर्ण एवं खुशहाल बना सकते हैं।
7. **घटनाओं और मानवीय मूल्यों में संतुलन (Balance in Events & Human Values)** – राजनीतिक चिंतकों के द्वारा राजनीतिक घटनाओं का विश्लेषण करके, उसका समाधान प्रस्तुत कर घटनाओं और मानवीय मूल्यों में संतुलन स्थापित करने का प्रयास तथा इसमें संतुलन के लिए राजनीतिक सिद्वांतों को अपने स्वरूप में परिवर्तन करना चाहता है।